

## रबी फसलों से मुनाफा बढ़ाने के लिये पर्यावरण अनुकूल तरीके

(\*अंजू कापड़ी, प्रदीप त्रिपुरा, उज्जमा मंजूर एवं एचएस गौड़)

गलगोटियास यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [anju.kapri@galgotiasuniversity.edu.in](mailto:anju.kapri@galgotiasuniversity.edu.in)

**भा**रतीय किसानों के लिए रबी फसलें महत्वपूर्ण हैं और मुनाफा बढ़ाना चाहिए। साथ ही, हमें प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने और आने वाली पीढ़ियों के लिए खेती को विकसित करने के लिए सही दिशा में कदम बढ़ाने की जरूरत है। इस लेख में हम रबी फसलों से अधिक पैसा कैसे कमा सकते हैं बताएंगे। रबी फसलों से मुनाफा बढ़ाने के लिए पर्यावरण अनुकूल तरीके अपनाना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हम सुस्त और स्थायी फसलों का उत्पादन कर सकते हैं, जिससे न केवल किसानों को लाभ होगा, बल्कि पर्यावरण को भी बचाया जा सकेगा।



**1. विभिन्नता और फसल चक्र:** फसल चक्र और विविधीकरण दोनों कृषि में महत्वपूर्ण हैं। ये दोनों प्रक्रियाओं का लक्ष्य खेती को सुस्त, वाणिज्यिक और प्रदूषणमुक्त बनाना है।

**विविधता:** खेती और बागवानी में विविधीकरण: विविधीकरण का अर्थ है विविध प्रजातियों और पौधों का एकीकरण। इससे जमीन की उपयोगिता बढ़ती है और प्रदुषण कम होता है। समय-समय पर विभिन्न प्रजातियों की फसलों का बदलना खेती की विविधता को बढ़ाता है।

**सब्जियों और फलों का विविधीकरण:** एक बागवानी में विभिन्न प्रकार की सब्जियां और फल उगाने से विविधता मिलती है, जैसे आम, सेब, केला, गाजर, टमाटर, प्याज और इतने पर। न केवल कृषकों को विभिन्न फसलों से लाभ मिलता है, बल्कि उपभोक्ताओं को भी लाभ मिलता है।

**फूलों का उगाव:** बागवानी में फूलों को उगाने से न केवल फूलों की खूबसूरती बढ़ती है, बल्कि फूलों से बनने वाले इत्रों और गहनों का प्रसार होता है, जिससे उनका आधिकारिक मूल्य बढ़ता है।

**बायो-उपयोग:** एक प्रौद्योगिकी है जिसमें जीवाणु, जैव रसायन और अन्य जीवाणु साधारित तत्वों का प्रयोग किया जाता है ताकि विभिन्न क्षेत्रों में सामरिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ हो सके। बायो-उपयोग के कुछ उदाहरण हैं:

**बायो-फर्टिलाइजर्स:** बायोफर्टिलाइजर्स को जैव रसायन और जीवाणुओं का उपयोग करके खेतों में डालना। इससे मिट्टी में पोषण की मात्रा बढ़ती है और फसलों की उत्पादकता बढ़ती है।

**जैविक पेस्टिसाइड्स:** जीवाणु-आधारित पेस्टिसाइड्स का उपयोग करके कीटनाशकों को नियंत्रित करना, जिससे फसलें और पर्यावरण दोनों स्वस्थ रहते हैं

**बायो-गैस उत्पादन:** जीवाणुओं का उपयोग करके जैव गैस उत्पादन करना, जैसे कि बायो-मेथेन उत्पादन करना। इससे ऊर्जा का एक सुरक्षित स्रोत मिलता है और कचरे का पुनःसंचार होता है।

**बायो-रिमेडिएशन:** जीवाणु और अन्य जीवाणु साधारित प्रवाह तकनीकों का उपयोग करके प्रदूषित भूमि को शुद्ध करना, जैसे कि नाले, झीलें, और अन्य स्थलों की सफाई करना।

**बायो-मेथेनोल उत्पादन:** बायो-मेथेनोल, जिसे जीवाणु से उत्पन्न किया जा सकता है, का उत्पादन करना। यह एक अच्छा ऊर्जा स्रोत हो सकता है जिससे पर्यावरण के साथीपन बना रहता है।

**जैविक खेती:** जीवाणु और अन्य जीवाणु साधारित खेती प्रणाली का अपनाना, जिससे खाद्यान्न उत्पादन में सुधार होती है और खेतीकरी में सामरिक लाभ होता है।

**बायो-कम्पोस्टिंग:** कचरे को जीवाणु और अन्य जीवाणु साधारित प्रक्रिया का उपयोग करके बायो-कम्पोस्ट बनाना। इससे खेतों को सुगम और पौष्टिक मिट्टी मिलती है और खाद्यान्न उत्पादन में मदद होती है।

**जीवाणु चिकित्सा:** जीवाणु से साधारित चिकित्सा प्रणाली का उपयोग करके रोगों का उपचार करना, जिससे दवाओं के प्रयोग को कम किया जा सकता है और जीवाणु से संबंधित और सुरक्षित उपाय हो सकते हैं।

**रोग और कीट प्रबंधन:** विविधीकरण से फसलों को प्राकृतिक रूप से सुरक्षित रखना संभव है। अलग-अलग - प्रजातियों को मिलाने से एक प्रजाति के रोग और कीटों का प्रबंधन संभावना होती है।

**1. सुरक्षित जल प्रवाह:** रबी फसलों के लिए जल का सही प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। किसान अच्छी सिंचाई तकनीकों, जैसे ड्रिप और ट्रिकल सिंचाई, का उपयोग करके जल संप्रेषण को कम कर सकते हैं और विकास की दिशा में अधिक सहारा दे सकते हैं। इससे उन्हें उचित जल सप्लाई मिलती है, जिससे फसलों की उत्पादकता में सुधार हो सकता है।

**उदाहरणार्थ:** किसानों ने ड्रिप सिंचाई तकनीक का उपयोग किया है, जिससे वे पानी बचाते हैं और फसलों को उचित मात्रा में पानी देते हैं।

**2. जैव खेती तकनीकों का अनुसरण:** जैव खेती तकनीकों प्रदूषण को कम कर सकती हैं, मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रख सकती हैं, और फसलों को सुरक्षित रख सकती हैं। इसमें प्राकृतिक शत्रुनाशकों, अपशिष्टों का पुनः प्रबंधन और जैविक उर्वरकों का उपयोग शामिल हैं।

**उदाहरणार्थ:** गौ-जीवन रसायनों का उपयोग करके कुछ किसानों ने अपने खेतों को उर्वरक से भर दिया है, जिससे उनकी फसलों की प्रकृतिक सुरक्षा में सुधार हुआ है।

**3. तकनीकी ज्ञान का प्रदान:** किसानों को नवीनतम तकनीकी ज्ञान देना बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें नवीनतम उपकरणों और सिंचाई तकनीकों का उपयोग करने की क्षमता होनी चाहिए साथ ही अच्छी खेती विधि का ज्ञान होना चाहिए।

**उदाहरणार्थ:** कृषि विज्ञान केंद्रों ने किसानों को सब्सिडाइज्ड तकनीकी उपकरण देकर कृषि को मॉडर्न बनाने की कोशिश की है, जिससे उत्पादकता में सुधार हुआ है।

**4. कीटनाशकों का सावधानीपूर्वक उपयोग:** ताकि प्राकृतिक संतुलन को खराब न करे, कीटनाशकों का सही मात्रा में और सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए। ज्यादा कीटनाशकों का प्रयोग मिट्टी और पानी को खराब कर सकता है।

**उदाहरणार्थ:** किसानों ने शेखरीय कीटनाशकों की जगह जैव उपायों का उपयोग करना शुरू किया है, जो उनकी फसलों को सुरक्षित रखते हैं और पर्यावरण को भी नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।

**5. बीजों का सुरक्षित स्तर पर रखना:** सुरक्षित बीजों को चुनना और सुरक्षित रूप से स्टोर करना भी महत्वपूर्ण है। इससे फसलों को बचाया जा सकता है और उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

उदाहरणार्थ: उत्तर प्रदेश में कुछ किसान बीजों को सुरक्षित रखने और अधिक मुनाफा कमाने के लिए स्टोरेज इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग कर रहे हैं।

भारतीय किसानों के लिए रबी फसलें महत्वपूर्ण हैं और मुनाफा बढ़ाना चाहिए। साथ ही, हमें प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने और आने वाली पीढ़ियों के लिए खेती को विकसित करने के लिए सही दिशा में कदम बढ़ाने की जरूरत है।

रबी फसलों से मुनाफा बढ़ाने के लिए पर्यावरण अनुकूल तरीकों का पालन करना हमारी कृषि को सुरक्षित रखेगा और हमारे प्राकृतिक संसाधनों को बचाएगा। हम अपनी खेती को सस्ती और सही तरीके से विकसित करेंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ और समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करेंगे।